1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को प्रकाशकोत्सव

दीपावली

की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 40, अंक 50 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 अक्टूबर, 2017 से रविवार 15 अक्टूबर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

शतवर्षीय पुरातन गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम, देवघर (झारखण्ड) के भवन को तोड़ने का मामला

हवाई अड्डा विस्तार हेतु गुरुकुल के पुराने भवन को तोड़ने में लगी झारखण्ड

प्रधानमन्त्री एवं राज्य सरकार से गुरुकुल बचाने की अपील

महामहिम राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमन्त्री एवं प्रधानमन्त्री को भारी संख्या में पत्र भेजें आर्यजन

जिलाधिकारी के बार-बार आश्वासन दिए जाने के बावजूद तोड़ा जा रहा है गुरुकुल का ऐतिहासिक भवन : सरकार की कथनी और करनी में विरोधाभास

– भारतभूषण त्रिपाठी, महामन्त्री गुरुकुल

जिस गुरुकुल में महामना पं. मदन मोहन मालवीय से लेकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य विनोबा भावे का इसके प्रांगण में पदार्पण हुआ हो, जो स्थान महावीर प्रसाद द्विवेदी, भगवतीचरण वर्मा, मैथलीशरण गुप्त, पंडित रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी, रामधारी सिंह दिनकर जैसे अनेक साहित्कारों विद्वानों के आगमन की भूमि एवं तीर्थस्थली रही हो आज उस आध्यामिक सांस्कृतिक धरोहर को सरकार रोंद रही है। आर्य समाज ये हमला स्वीकार नहीं करेगा। हम विकास के विरोधी नहीं हैं लेकिन अपनी विरासत की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध हैं। सांस्कृतिक भावना से छेड़छाड़ मंजूर नहीं है। विकास के लिए जमीन अधिग्रहण के मामले में सभ्यता और संस्कृति के सिद्धांत के साथ समझौता नहीं किया जा सकता आवश्यकता पड़ी तो जबरदस्त आन्दोलन होगा। गुरुकुल की रक्षा हर कीमत पर करेंगे।

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम, देवघर (झारखण्ड) का एतिहासिक भवन एवं उसके भूभाग को जमीदरोंज करती जे.सी.बी.

समाज की शैक्षिक और सामाजिक उन्नति के लिए झारखण्ड देवघर में 100 वर्षीय पुरातन धरोहर गुरुकुल महाविद्यालय वैधनाथधाम को आज विकास के नाम पर तोड़ा जा रहा है। ये बुलडोजर गुरुकुल पर नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति पर चला है। जो गुरुकुल वैदिक परम्परा से परिपूर्ण, भेदभाव से ऊपर उठकर बच्चों को उच्च कोटि की शिक्षा दे रहा हो जो गुरुकुल राष्ट्र के लिए अपने प्राण तक न्योछावर करने वाले वीर, विद्वान और चरित्रवान नागरिक पैदा कर रहा हो। उस सांस्कृतिक विरासत (गुरुकुल) को विकास के नाम पर खत्म करने का कार्य किया जा रहा है।

इस गुरुकुल की स्थापना आचार्य रामचन्द्र द्विवेदी ने १९१९ में की थी। उनका उद्देश्य था कि सामाजिक शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को शारीरिक, मानसिक, नैतिक और उनका आत्मिक उन्नयन कर राष्ट्र और समाज के लिए सुयोग्य नागरिक बनाना। अध्ययन और अध्यापन चरित्र और सांस्कृतिक व्यवस्था, अनुशासन उत्कृटता और दक्षता का प्रतीक इस गुरुकुल में अनेकों भारतीय महापुरुषों के पांव पड़े और उनसे जुड़े किस्से यह शिक्षा का मंदिर समेटे हुए है।

शनिवार 7 अक्तूबर को गुरुकुल महा विद्यालय का हवाई पट्टी के विस्तारीकरण के नाम पर एक हिस्सा जेसीबी से गिरा दिया गया। जबकि इस ऐतिहासिक शिक्षण संस्थान की जमीन के अधिग्रहण का मामला झारखण्ड हाईकोर्ट में लम्बित पड़ा है। इस दौरान गुरुकुल प्रबन्धन डीसी देवघर, एसडीओ देवघर, मुख्यमंत्री झारखण्ड और तो और प्रधानमंत्री से लेकर राष्ट्रपति तक पत्राचार के माध्यम से इस धरोहर को बचाने की गुहार लगा चुका है। लेकिन इसके बावजूद विकास का ढोंग दिखाकर झारखंड सरकार महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की १00 साल पुरानी सांस्कृतिक, धार्मिक विरासत को तोड़ने का प्रयास जारी है। सरकार की ओर से जिलाधिकारी द्वारा गुरुकुल प्रबन्धन को लगाताार आश्वासन दिए जा रहे थे कि गुरुकुल के भवन को नहीं तोड़ा जाएगा। बावजूद इसके गुरुकुल के ऐतिहासिक भवन को तोड़ने का कार्य झारखण्ड सरकार द्वारा किया जा रहा है।

गुरुकुल महाविद्यालय की जमीन को अनवाद प्रति कदीम दिखाकर गलत अधिग्रहण नीति को तैयार किया गया है। गुरुकुल के मुख्यभवन जहाँ शिक्षण भवन, यज्ञशाला, छात्रावास पुस्तकालय एवं अन्य भवन है वहां शिक्षण का कार्य निरंतर चल रहा है। लेकिन लूट के अर्थशास्त्र में सियासत की आँखें इतनी पथरीली हो गयी हैं कि शिक्षा के मंदिर को तोड़कर उसकी जगह कंक्रीट के जंगल उगाना चाह रही है। गुरुकुल हमारा इतिहास है, हमारी पहचान, हमारी शिक्षा पद्धति गुरुकुल के माध्यम से जानी जाती है। हम जब तक अपनी इस अति प्राचीन पद्धति के साथ जुड़े हुए हैं तब तक हम आर्य वैदिक समाज के लोग हैं। संस्कृति और पद्धति उजड़ने के बाद हमाराअस्तित्व-पहचान, भाषा-संस्कृति और इतिहास अपने आप मिट जाएगी। क्या स्वामी जी की सांस्कृतिक विरासत (गुरुकुल देवघर झारखंड) को बचाने का कार्य नहीं होना चाहिए? ताकि आनेवाली पीढ़ी हमें यह न कहे कि इस प्राचीन शिक्षा पद्धति एवं उस के माध्यम से सदियों

– शेष पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

अमृत-आत्मज्ञान

यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश।। - ऋ. 1/164/21
ऋषिः दीर्घतमाः।। **देवता** - विश्वेदेवाः।। **छन्दः त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **यत्र** = जहां, इस शरीर में **सुपर्णाः** = सुपतनशील इन्द्रियां **अनिमेषम्** = निरन्तर **अमृतस्य** = अमृतज्ञान के **भागम्** = अपने भाग का लाकर **विदथा** = वेदन के साथ **अभिस्वरन्ति** = चल रही हैं, मानो बोल रही हैं **अत्र** = उस, इस मेरे शरीर में **विश्वस्य भुवनस्य** = सब ब्रह्माण्ड का **इनः** = ईश्वर **गोपाः** = और सब भुवन का रक्षक **सः धीरः**= वह धीमान् ज्ञानमय **पाकं मा** = मुझ पक्तव्य में (अपरिपक्व में) **आविवेश**= प्रविष्ट होवे।

विनय- मनुष्य एक कच्चे घड़े के समान है जब तक कि यह आत्मज्ञान की अग्नि में पक नहीं जाता। मैं कच्चा घड़ा इस संसार-सागर में पड़ा हुआ घुल रहा हूं, नष्ट होता जा रहा हूं। हे जगदीश्वर! यदि तुम्हारे ज्ञान की अग्नि की आंच मुझे शीघ्र पका न देगी तो मैं जल्दी ही समाप्त हो जाऊंगा। मैं अभी तक 'पाक हूं'-पक्तव्य हूं, कच्चा हूं। तुम पक्व हो, विपक्वप्रज्ञ हो। तुम शीर्घ मुझमें प्रवेश करो। तुम अमृत हो, मैं अभी तक मर्त्य हूं। तुम इस भुवन के ईश्वर हो, मैं अनीश हूं। जिस दिन मुझे आत्मा का ज्ञान हो जाएगा, अपनी अमरता का भान हो जाएगा तो मैं पक जाऊंगा। आत्मज्ञानी, अमर, परिपक्व होकर मैं तो संसार में पड़ा हुआ भी गल नहीं सकूंगा। मुझमें प्रविष्ट होकर मुझे अमर कर दो, पका दो। इस कच्चे घड़े में (शरीर में) यद्यपि इन्द्रियां लगातार कुछ-न-कुछ ज्ञान लाती हुई चल रही हैं, परन्तु उनके लाये हुए ज्ञान में-जुगनू के-से तुच्छ प्रकाश में-वह अग्नि नहीं है जो मुझे पका सके। सच तो यह है कि वे इन्द्रियां जिस पूर्ण अमर ज्ञान के एक अंश को अपने वेदन में लाती हैं, उसी की अभिलाषा अब मुझे लग गई है। उन्हीं द्वारा पता लगा है कि कोई अमृत ज्ञान भी है जिसके द्वारा मैं पूरा पक सकता हूं। इन्द्रियों में जो वेदन है वह तुम्हारे ही अपार ज्ञान, अनन्त चैतन्य से आता है। यह समझ आ जाने पर आज ये इन्द्रियां मेरे लिए जो कुछ ज्ञान लाती हैं उसमें मुझे अमरता का ही सन्देश सुनाई देता है। ये जो भी कुछ वेदन करती हैं उसमें मुझे वे यही बोल रही हैं'-तू अमर बन, अमर बन! अपने को पका ले, पका ले!'' अतः हे सब ब्रह्माण्ड के स्वामिन्! मुझे पक्का करने के लिए तुम मेरे इस शरीर के भी स्वामी हो जाओ। हे त्रिभुवन के रक्षक! इस शरीर की भी रक्षा करो। हे धीर! ज्ञानमय! तुम्हारे प्रविष्ट हुए बिना यह कच्चा घड़ा कब तक रक्षित रह सकता है।

साभार-वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बवाल का संवैधानिक दिन

किसी प्रकार की हिंसा रोकने के लिए जब कोई सरकार काफी कुछ नहीं करती है तो इस कारण आगे की हिंसा की आशंका रहती है। देश में लोकतांत्रिक सरकार है लेकिन मजहब के नाम अक्सर जायज ठहराई जा रही हिंसा लोकतंत्र की कमजोरी को लेकर चिन्ता पैदा करती है। किसी भी हिंसा को हिंसा की नज़र से देखने के साथ उसकी तह में जरूर जाना चाहिए यदि उक्त हिंसा का जाति, मजहब या आस्था के नाम पर बचाव किया तो उसका कद बढ़ जाता है और वह जायज दिखने लगती है। पिछले दिनों जब महाराणा प्रताप की शोभा यात्रा को लेकर सहारनपुर में जो बवाल हुआ था हमने आर्य सन्देश के माध्यम से उसकी भी निन्दा की थी। हमने खबर का हवाला देते हुए तब भी लिखा था कि जाति मत या मजहब के नाम हिंसा देश की सामाजिक समरसता व लोकतंत्र को कमजोर करती है।

इस बार फिर ताजिया जुलूस को लेकर कई शहरों में हिंसा और विवाद हुआ। इस दौरान बलिया और कानपुर में जमकर बवाल हुआ। दो पक्षों के बीच पथराव और आगजनी के साथ फायरिंग भी हुई। सिकन्दरपुर कस्बे में मोहर्रम जुलूस के दौरान पथराव और आगजनी के साथ 3 बाइक को क्षतिग्रस्त किया गया। कानपुर और बाराबंकी में भी हालात लगभग ऐसे ही रहे इसके बाद बहराइच के फखरपुर में मूर्ति विसर्जन जुलूस के रास्ते को लेकर दो समुदाय आमने-सामने आ गए और पथराव हुआ। कुशीनगर में थानाध्यक्ष पर हमला हुआ तो पीलीभीत में हिंसा के चलते कई लोग घायल हुए। मतलब ये कि 1400 साल पहले अरब देश में हुए हिंसात्मक मातम के नाम पर 21वीं सदी के भारत में खूब मातम मनाया गया। ताजिये तो जुलूस निकालकर चले गये पर जली दुकान, फूंके वाहन और घायल लोग आज के भारत की कहानी बयाँ कर रहे हैं। ये कोई इस बार का नया मामला नहीं है हर वर्ष यही हाल होता है। मजहब के नाम पर एक दिन की प्रतिवर्ष की यह हिंसा जैसे संविधानिक रूप से जायज सी हो गयी हो?

दरअसल मुहर्रम इस्लामिक कैलेंडर का पहला महीना है। लेकिन इसका स्वागत मुसलमान नम आँखों से करते हैं, खुशियां नहीं मनाते, कहा जाता है कि इसी दिन हजरत मुहम्मद के नवासे इमाम हुसैन को एक दहशतगर्द गिरोह ने, कर्बला मैं उनके परिवार के साथ घेरकर 10 मुहर्रम 61 हिजरी को भूखा प्यासा कत्ल कर दिया था। हर साल १० मुहर्रम को मुसलमान इमाम हुसैन की कुरबानी को याद करते हैं। ताजिया का जुलूस उस गम को याद करने के लिए निकाला जाता है।

इसकी प्रतिक्रिया में मुसलमान नाम लेकर पुकारते हैं, मातम मनाते हैं और उस घटना का आक्रोश प्रकट करते हैं, जैसे 1400 वर्ष पहले हुए उस संहार की क्षतिपूर्ति की माँग कर रहे हों। कुछ लोग ताजिये के दौरान उस घटना का उल्लेख भाषण के जरिये इस तरीके से करते हैं जैसे उसमें दोषी आज के लोग हों? या कुछ यूं समझिये कि माहौल मानसिक रूप से इस कदर रच दिया जाता है जैसे यदि हम सब लोग चाहते तो बादशाह यजीद को रोक सकते थे कि इमाम हुसैन का कत्ल न करें। इसके बाद घटना पर हिंसा की धमकी देकर वास्तविक हिंसा भी करने से नहीं चुकते हैं। इसके विपरीत हमारे देश के नेता कुछ भी स्पष्ट नहीं बोलते, यदि बोलते हैं तो अंत में झुक जाते हैं। इसके साथ ही प्रत्येक विवाद के बाद धर्मनिपेक्षता का विषय अवश्य चर्चा में आ जाता है।

इस क्रम में मैं दो बिन्दुओं के बारे में चर्चा करना चाहूँगा। पहला तो यह कि मुसलमानों के बारे में चर्चा करने, उनके किसी भी हिंसक कृत्य की आलोचना करने का अधिकार क्षीण हुआ है। दूसरा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का राग तो अत्यंत छोटा

....प्रतिक्रिया में मुसलमान नाम लेकर पुकारते हैं, मातम मनाते हैं और उस घटना का आक्रोश प्रकट करते हैं, जैसे 1400 वर्ष पहले हुए उस संहार की क्षतिपूर्ति की माँग कर रहे हों। कुछ लोग ताजिये के दौरान उस घटना का उल्लेख भाषण के जरिये इस तरीके से करते हैं जैसे उसमें दोषी आज के लोग हों? या कुछ यूं समझिये कि माहौल मानसिक रूप से इस कदर रच दिया जाता है जैसे यदि हम सब लोग चाहते तो बादशाह यजीद को रोक सकते थे .....

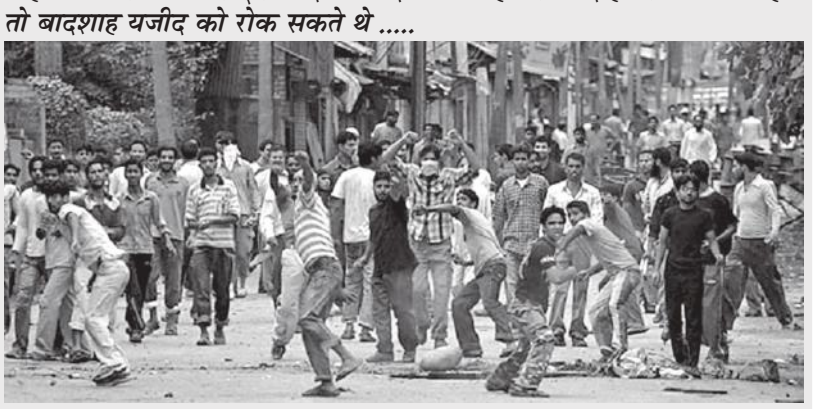

पहलू है इसकी आड़ में दाँव पर तो कुछ कहीं अधिक लगा है जो कि निश्चय ही हमारे समय का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या हिंसा और इस तरीके के कृत्यों से लोग अपनी ऐतिहासिक हजारों साल पुरानी सभ्यता सुरक्षित रख पायेंगे? या फिर किसी एक संस्कृति और कानून के समक्ष समर्पण कर द्वितीय श्रेणी के नागरिक होकर रह जायेंगे? इस्लाम के आरम्भ से आधुनिक काल तक इसकी सर्वोच्चता को लेकर इसके बारे में कुछ नहीं बदला जैसेकि इसके कुछ लक्ष्य हों जैसे पहला लक्ष्य है, इस्लाम की महत्ता को स्थापित करना। जैसे एक मजहब को विशेष विशेषाधिकार प्राप्त हों और उसके विचारों के रास्ते इन्सान, बाजार, सरकार या वाहन जो आएगा उसे फूंक दिया जायेगा। मोहर्रम के दिन हुई उपरोक्त सभी हिंसक घटनाएँ इसी तरफ इशारा कर रही हैं।

मगर जो चीज नहीं होनी चाहिए और जो कहीं नहीं हुई है, वह हमारे देश में हो रही है, क्योंकि शायद सरकार न तो प्रेम से समझा-बुझाकर लोगों को सीधी राह पर ला सकती है और उसका परिष्कार भी नहीं कर सकती दूसरी सोच यह स्थिर हो गयी कि इन घटनाओं से इस्लाम को वह लाभ मिलेगा जो अन्य मजहबों को नहीं मिला है। मसलन अफगानिस्तान में बुद्ध की मूर्ति खंडित हो सकती है। बोधगया के मंदिर में बमविस्फोट हो सकते है, जीसस की खिंचाई हो सकती है। राम और श्रीकृष्ण को अपशब्द बोला जा सकता है, लेकिन नबी का चित्र नहीं बन सकता, ताजिये का रास्ता नहीं बदला जा सकता यदि कोशिश भी की तो हिंसा के तांडव के लिए तैयार रहिये इससे मजहब विशेष के सम्बंध में लाभ भी होगा जोकि अब भी उसकी सर्वोच्चता और बलात् के सिद्धांत से प्रेरित है। इस बात के लिये करतल ध्वनि भी होती है। इसे कुछ यूँ भी समझा जा सकता है कि आज विश्व में इस्लामवाद काफी तेजी से बढ़ा है जो कि एक क्रांतिकारी सशक्त उदहारण बन चुका है जिसने कि वामपंथ के साथ एक गठबन्धन बना लिया है जोकि सभ्य समाज को प्रभाव में ले रहा है और अनेक सरकारों को चुनौती दे रहा है, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में अपने एजेंडे को चतुराई से लागू कर रहा है। शायद इसी कारण मजहब और आस्था के नाम पर हो रही हिंसक घटनाएँ वामपंथ और सेकुलरवाद द्वारा स्वीकार की जा रही हैं।

-सम्पादकीय

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्रगान पर मदरसों की लकीर?

....राष्ट्रगीत वन्देमातरम को लेकर समय-समय पर टकराव देखा, इतिहास इसका साक्षी भी हैं कि 1938 में मुहम्मद अली जिन्ना ने जब खुले तौर पर पार्टी के अधिवेशनों में वन्दे मातरम् गाए जाने के खिलाफ बगावत की थी। परिणाम स्वरूप देश को बंटवारे का दंश झेलना पड़ा था। उस समय भी यही मजहबी फुंकार सुनाई दी थी आज फिर उसी विचारधारा को जिन्दा रखने का कार्य पुनः दोहराया जा रहा है।....

पिछले 70 वर्षों में ऐसा कोई भारतीय नहीं होगा, जो राष्ट्रगान के शब्दों और उन्हें दी गई धुन से गुजरा न हो। राष्ट्रगान पिछले 70 वर्षों से हमारी स्वतंत्रता और संप्रभुता पर गर्व करने का मौका देता रहा है। 1911 में लिखे गीत को 24 जनवरी 1950 को भारत का राष्ट्रगान घोषित किया गया था। तब से ही यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, संस्कृति, एकता व अखण्डता का प्रतीक बना हुआ है। लेकिन अब 70 वर्ष बाद इसे लेकर एकाएक राजनीति शुरू हो चुकी है। इस गीत के शब्दों से किसी की स्वतंत्रता का हनन होने लगा तो किसी के मजहब को अचानक खतरा उत्पन्न होने का भय सताने लगा है। राष्ट्रगान को लेकर अब मदरसे एक लकीर खींच रहे हैं। परन्तु इससे भी ज्यादा दुखद यह है कि ऐसे करने वालों का, समर्थन करने वालों की भी कोई कमी नहीं है। नहीं तो क्या वजह है कि कश्मीर में होने वाले विरोध प्रदर्शनों में पाकिस्तानी झंडा लहराने, भारत-पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मैच के दौरान पाक की टीम का समर्थन करने और अपने देश के ही राष्ट्रगान को हिंदूवादी और अपवित्र बताने वालों के समर्थन में भी खड़े होने वाले हजारों लोग मिल जाते हैं। भले ही ऐसे कट्टरपंथी लोगों की संख्या अभी कम हो लेकिन इस बीमारी को नासूर बनाने वालों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है।

हाल ही में एक बार फिर इलाहाबाद हाई कोर्ट ने मदरसों की तरफ से सरकार के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी है। हाई कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया है कि मदरसों को राष्ट्रगान गाने से छूट नहीं मिलेगी। हाई कोर्ट ने कहा है कि राष्ट्रगान और तिरंगे का सम्मान संवैधानिक कर्तव्य है। उच्च न्यायालय ने राष्ट्रगान को जाति, धर्म और भाषा भेद से परे बताते हुए मदरसों की आपत्तियों को दरकिनार कर दिया। हाई कोर्ट के इस फैसले के बाद अब मदरसों में राष्ट्रगान अनिवार्य रूप से गाना ही पड़ेगा। इससे पहले 15 अगस्त को मदरसों में ध्वजारोहण और तिरंगा फहराने का कार्यक्रम करने और इसकी रिकॉर्डिंग करने के फरमान को लेकर भी यूपी में मतभेद के स्वर खड़े हो चुके हैं।

देश में मजहब, मजहब के नाम पर राजनीति और उस राजनीति से लाभ उठाने वाले नेता अब देश से भी बड़े बन चुके है। शायद यही वजह है कि इस देश के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना तो दूर ये लोग बड़े आराम से उससे जुड़े प्रतीकों, चिन्हों और सम्मानों का मजाक उड़ा सकते हैं और फिर बड़े शान से उससे मिलने वाली सुविधाओं पर अपना हक जता सकते हैं। आप यहां धर्म, जाति या किसी और खेल से अपने अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं और उसे हासिल भी कर सकते हैं लेकिन बात जब देश के प्रति अपने कर्तव्यों की आए तो मजहब और जाति के नाम पर उससे मुंह फेर सकते हैं। यदि कोई इनके इस आचरण पर सवाल उठाये तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का रोना रोया जा सकता है।

राष्ट्रगीत वन्देमातरम को लेकर समय-समय टकराव देखा इतिहास इसका साक्षी भी कि 1938 में मुहम्मद अली जिन्ना ने जब खुले तौर पर पार्टी के अधिवेशनों में वन्दे मातरम् गाए जाने के खिलाफ बगावत की थी। परिणाम स्वरूप देश को बंटवारे का दंश झेलना पड़ा था। उस समय भी यही मजहबी फुंकार सुनाई दी थी आज फिर उसी विचारधारा को जिन्दा रखने का कार्य पुनः दोहराया जा रहा है। आखिर क्या कारण कि पिछले वर्ष कोलकाता के एक मदरसे में एक हेडमास्टर को सिर्फ इसलिए पीटा जाता है क्योंकि उसने आने वाली पीढ़ियों को इस देश का राष्ट्रगान सिखाने की कोशिश की थी। ऐसी घटनाएं यहां पहली बार नहीं हुई हैं लेकिन अफसोस है कि ये बार-बार दोहराई जाती रही हैं। सरकारों को सब पता है लेकिन फिर भी सत्ता का लालच उन्हें इन घटनाओं के प्रति कुछ करने और इन्हें दोबारा घटने से रोकने के बजाय अपना मुंह और आंखें बंद रखने पर विवश करता है।

सब जानते हैं कोई भी देश सिर्फ अपने विशालकाय क्षेत्रफल और संसाधनों के बल पर महान नहीं बनता है बल्कि उसे महान बनाते हैं उस देश के नागरिक। उसका राष्ट्रवाद, उसके नागरिकों का देश के प्रति अगाध प्रेम उसके प्रतीकों, चिन्हों के प्रति उसकी निष्ठा और उसकी संस्कृतिक विरासत के प्रति उनकी श्रद्धा। यदि नागरिकों के मन में ही अपने ही देश के लिए सम्मान और प्यार नहीं होगा तो भला कैसे वह देश शक्तिशाली बनेगा और आगे बढ़ेगा। ऐसे देश को बाहरी दुश्मनों की जरूरत ही क्या है जिसके अपने ही इतनी घातक सोच रखते हैं? मात्र एक राष्ट्रगान से काजी अख्तर के खिलाफ उस समय फतवा जारी कर दिया गया था उसे साफ शब्दों में कहा गया था कि मदरसा और उस इलाके में भी कदम न रखें। जब एक देश में उसका राष्ट्रगान ही शर्मिंदा होता हो और उस देश का ध्वज गैर मजहबी हो जाये तो क्या उस देश में धर्मनिपेक्षता का सिद्धांत बौना नहीं हो जाता? पर शायद ही किसी राजनितिक दल को देश और उससे जुड़े प्रतीकों को सम्मान न देने वालों के खिलाफ कार्यवाही करने की चिंता हो। जब राजनीति करने वालों को ही देश की चिंता नहीं है तो भला इन कट्टरपंथियों की फिक्र उन्हें क्यों होने लगी और इन लोगों को इस देश की फिक्र क्यों होने लगी?

-राजीव चौधरी

बोध कथा

पहले मन को निर्मल करो

एक महात्मा थे। किसी घर में भिक्षा मांगने गये। घर की देवी ने भिक्षा दी और हाथ जोड़कर बोली-''महात्मा जी, कोई उपदेश दीजिये!''

महात्मा ने कहा-''आज नहीं, कल उपदेश दूंगा।''

देवी ने कहा-''तो कल भी यहीं से भिक्षा लीजिये!''

दूसरे दिन जब महात्मा भिक्षा लेने के लिए चलने लगे तो अपने कमण्डल में कुछ गोबर भर लिया, कुछ कूड़ा, कुछ कंकर। कमण्डल लेकर देवी के घर पहुंचे। देवी ने उस दिन बहुत अच्छी खीर बनाई थी उनके लिए। उसमें बादाम और पिस्ते डाले थे। महात्मा ने आवाज दी-''ओ३म् तत् सत्!''

देवी खीर का कटोरा लेकर बाहर आई। महात्मा ने अपना कमण्डल आगे कर दिया। देवी उसमें खीर डालने लगी तो देखा कि वहां गोबर और कूड़ भरा पड़ा है।

रुककर बोली-''महाराज, यह कमण्डल तो गन्दा है।''

महात्मा ने कहा-''हां, गन्दा तो है। इसमें गोबर है, कूड़ा है, परन्तु अब करना क्या है! खीर भी इसी में डाल दो।''देवी ने का-''नहीं महाराज! इसमें डालने से तो खराब हो जायगी। मुझे दीजिए यह कमण्डल, मैं इसे शुद्ध कर लाती हूं।''

महाराज बोले-''अच्छा मां, तब डालेगी खीर, जब कूड़ा-कंकर साफ हो जाये?''देवी बोली-''हां।''

महात्मा बोले-''यही मेरा उपदेश है। मन में जब तक चिन्ताओं का कूड़ा-करकट और बुरे संस्कारों का गोबर भरा है, तब तक उपदेश के अमृत का लाभ नहीं होगा। उपदेश का अमृत प्राप्त करना है तो इससे पूर्व मन को शुद्ध करना चाहिये, चिन्ताओं को दूर कर देना चाहिये, बुरे संस्कारों को समाप्त कर देना चाहिए। तभी ईश्वर का नाम वहां चमक सकता है और तभी सुख और आनन्द की ज्योति जाग उठती है।''

कबीरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।
पाछे-पाछे हरि फिरै, कहत कबीर कबीर।

साभार :- बोध कथाएँ

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रेरक प्रसंग

चलो यहीं रह लेते हैं

किसी कवि की एक सुन्दर रचना है-

हम मस्तों की है क्या हस्ती,
हम आज यहाँ कल वहाँ चले।
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।।

धर्म-दीवाने आर्यवीरों का इतिहास भी कुछ ऐसा ही होता है। यही हकीम सन्तरामजी राजस्थान आर्यप्रतिनिधि सभा की विनती पर राजस्थान में वेदप्रचार करते हुए भ्रमण कर रहे थे। आप शाहपुरा पहुँचे। वहाँ ज्वर फैला हुआ था। घर-घर में ज्वर घुसा हुआ था। प्रजा बहुत परेशान थी। महाराज नाहरसिंहजी को पता चला कि पण्डित सन्तरामजी एक सुदक्ष और बड़े अनुभवी हकीम हैं। महाराज ने उनके सामने अपनी तथा प्रजा की परेशानी रक्खी। वे प्रचार-यात्रा में कुछ औषधियाँ तो रक्खा ही करते थे।

आपने रोगियों की सेवा आरम्भ कर दी। ईश्वरकृपा से लोगों को उनकी सेवा से बड़ा लाभ पहुँचा। ज्वर के प्रकोप से अनेक जाने बच गईं। अब महाराज ने उनसे राज्य में ही रहने का अनुरोध किया। वे मान गये। उन्हें राज्य का हकीम बना दिया गया, फिर उन्हें दीवानी का जज नियुक्त कर दिया गया। अब वे राजस्थान के ही हो गये। वहीं बस गये और फिर वहीं चल बसे।

पाठकवृन्द! कितना तप-त्याग है इस देवता का। वे गुरदासपुर जिले की हरी-भरी धरती के निवासी थे। इधर भी कोई कम मान न था। पण्डित लेखरामजी के साहित्य ने उन्हें आर्यमुसाफिर बना दिया। मुसाफिर ऐसे बने कि ऋषि मिशन के लिए घरबार ही छोड़ दिया। राजस्थान के लोग आज उनको सर्वथा भूल चुके हैं।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाज के जिन्दा बलिदानी – 2

– विनय आर्य

...गुप्त रहस्य प्रकट हो चुका है कि मालाबार में मोपला लोगों ने हिन्दुओं के साथ घृणित क्रिया की है। इस बात को अंग्रेजी सरकार और कांग्रेस दोनों की ओर से स्वीकार भी किया गया है। अत: अब इस पर संदेह नहीं रहा हाँ, मतभेद इस बात पर है कि कितने हिन्दुओं पर अत्याचार किया गया है कोई तीन हजार कहता है तो कोई 500.. संख्या कितनी भी हो परन्तु इस बात से तो इंकार नहीं किया जा सकता कि मोपलों ने कुछ नहीं किया है।.....

आर्य समाज के वीर सिपाहियों की बदोलत शुद्धिकरण का कार्य बड़ी तेजी से हो रहा था, परन्तु मुसीबत बहुत भारी थी कि काम करने वालों की और अधिक आवश्यकता थी। विशेषकर जबदस्ती मुस्लिम बनाये गये हिन्दुओं की सुध लेने और उनके विषय में आवश्यक कार्य करने के लिए आर्य समाज की आवश्यकता अनुभव की गई। इसलिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान और लाहौर ने मालाबार के पीड़ितों हिन्दुओं को सहायता देने और बलात् मुस्लिम बनाये हिन्दुओं को पुन: हिन्दू बनाने के लिए प्रस्ताव पास किया जिसमें महात्मा हंसराज जी ने एक अपील प्रकाशित की–

अपील का कुछ अंश इस प्रकार है– यह गुप्त रहस्य प्रकट हो चुका है कि मालाबार में मोपला लोगों ने हिन्दुओं के साथ घृणित क्रिया की है। इस बात को अंग्रेजी सरकार और कांग्रेस दोनों की ओर से स्वीकार भी किया गया है। अत: अब इस पर संदेह नहीं रहा हाँ, मतभेद इस बात पर है कि कितने हिन्दुओं पर अत्याचार किया गया है कोई तीन हजार कहता है तो कोई 500। संख्या कितनी भी हो परन्तु इस बात से तो इंकार नहीं किया जा सकता कि मोपलों ने कुछ नहीं किया है। मुस्लिम नेता इसे इस्लाम के खिलाफ बता निन्दा कर रहे हैं। पर निन्दा करने से इस भारी जन–धन और धर्म की क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। हिन्दू नेता और मठाधीश जबरन पतित किये गये लोगों की घर वापसी की आज्ञा देकर सुगमता प्रस्तुत कर रहे हैं। यदि इस समय हिन्दुओं में सम्मिलित होकर अपनी पूरी शक्ति के साथ हिन्दुओं को वापस अपनी गोद में ले लिया तो भविष्य में उन लोगों का दोबारा साहस नहीं होगा क्योंकि वह समझेंगे कि हिन्दू भाई अपने भाइयों की हर प्रकार से सहायता करने के लिए तैयार हैं। मैं अपने हिन्दू भाइयों से अपील करता हूँ जिनके हृदय में अपने पवित्र धर्म के लिए श्रद्धा और प्रेम है और जो अपने धर्म की लाज रखने के लिए अपने भीतर कोई भाव रखते हैं अपनी सहायता का हाथ आगे बढायें ताकि हम अपने भाइयों की सहायता शीघ्र से शीघ्र कर सकें। (हंसराज प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा अनारकली, लाहौर)

आर्य समाज की इस अपील का प्रभाव हर एक हिन्दू के मन पर हुआ जिस कारण तत्काल प्रभाव से कार्य करना शुरू किया गया जिसका विवरण पिछले अंक में दिया गया था। पंडित मस्तानचंद जी बी.ए. के अधीन कैम्प में करीब 4 हजार महिलाएं और बच्चे आ गये थे। इनमें कुछ महिलाएं गर्भ से तो वहीं कुछ वृद्ध और युवा थीं। ऐसी माताएं भी थी जिनकी गोद में 10 से 15 दिन के बच्चे थे, जो कैम्प में आने से कुछ माह पहले लखपतियों की आँखों के तारे थे परन्तु अब अनाथ हो चुके थे। बहुत सी महिलाएं और बच्चे ऐसे थे जिनके घर जलाये जा चुके थे। अब जाएँ तो जाएं कहाँ? इसके अलावा दूसरे कैम्प में जो ऋषिराम जी की देखरेख में कालीकट में चल रहा था। उसमें भी 2 हजार से ज्यादा स्त्री पुरुष और बच्चे थे। उस समय दिल्ली से लेकर लाहौर तक संयुक्त प्रान्त के दानी हिन्दू आर्यों के दान की बदौलत करीब 6 हजार से ज्यादा स्त्री, पुरुष और बच्चे अपनी भूख की अग्नि को मिटा रहे थे।

इस सहायता सम्बन्धी काम के साथ–साथ शुद्धि का कार्य बराबर चल रहा था। सारे इलाके में यह प्रसिद्ध हो चुका था कि आर्य समाज के लोग जबरन मुसलमान बनाए गये हिन्दुओं को विशेष रूप से सहायता देते हैं। परन्तु फिर भी ऐसी खबरें आ रही थीं कि मालाबार के भीतरी इलाकों में बहुत से ऐसे हिन्दू हैं जो मोपला भेष में रह रहे हैं। जान–माल का भय उन्हें हिन्दू बनने से रोक रहा है। इस बात की आवश्यकता थी कि कोई मनुष्य भीतरी इलाकों में जाकर पता लगाये। लेकिन वहां पहुंचना अपने आप को खतरे में डालना था क्योंकि वहां ऐसा बताया जाता था कि मालाबार कांड उपद्रव के कारण जान गंवाए लोगों की खोपड़ियाँ रास्तों में पड़ी मिलती हैं। सड़कें अधिक नहीं थी, अधिकतर जंगल और पहाड़ियाँ थी, नदियाँ और उनसे घिरे इलाकों में यह हिंसा का तांडव ज्यादा जोर से हुआ था। अत: इन सब की चिंता किये बगैर आर्य समाज के वीर लाला खुशहालचंद खुरसंद ने यह काम अपने कंधों पर लिया और भीतरी इलाकों का दौरा करके ऐसे लोगों को कालीकट पहुँचने की प्रेरणा की। उनके इस परिश्रम का फल यह हुआ कि बहुत से लोग हिन्दू बनने के लिए कालीकट पहुँच गये 15 मई से पहले दो हजार दो सौ मुसलमान हुए हिन्दू फिर अपने धर्म में लौट चुके थे। जून और जुलाई माह में 400 और जबरन मुस्लिम हुए हिन्दू अपने धर्म में सम्मलित किये गये।

....क्रमश:

प्रथम पृष्ठ का शेष हवाई अड्डा विस्तार हेतु गुरुकुल .....

तक विश्व को रास्ता दिखाने संस्कृति को बर्बाद कर विकास और भारतीय गणतंत्र का निर्माण किया गया।

एक बेहतर राष्ट्र के निर्माण में सिर्फ सीमेंट, कंक्रीट ही योगदान नहीं होता बल्कि उसमें नैतिक, आचरणशील, मनुष्यों का सबसे बड़ा योगदान होता है। मानव के निर्माण में सिर्फ पर्यावरण ही सबसे बड़ा घटक तत्व नहीं होता। अपितु उसके साथ–साथ उसकी शिक्षा, उसके संस्कार, भी हिस्सा लेते हैं। इसलिए अच्छे वातावरण में भी इन्सान पतित हो सकता है लेकिन अच्छी शिक्षा और संस्कार के माध्यम से बुरे पर्यावरण में भी वह ऊँचा उठ सकता है।

कल तक वहां पढ़ने वाले जो बच्चे हाथ में कलम थामते थे अब वह हाथ बेबस हैं। आज वही हाथ गुरुकुल के टूटे प्राचीन भवन की दीवारें और बिखरी खपरैल को समेट रहे हैं। क्योंकि वहां विकास के नाम पर उनके सपनों को तोड़ा जा रहा है। विकास की इसी अविरल धारा में सिर्फ गुरुकुल ही नहीं बल्कि वैदिक कालीन सभ्यता को नष्ट किया जा रहा है। क्या राष्ट्र निर्माण की आड़ में संस्कृति विनाश का यह कदम उचित है?

इस संकट पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल आर्य जी ने प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द, राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुरमू, एवं मुख्यमन्त्री श्री रघुबरदास को पत्र लिखकर विकास के नाम पर इस विध्वंशसकारी कार्य को तत्काल रोकने एवं सरकार की ओर से पुनर्निर्माण करने की मांग करते हुए कहा कि आर्यसमाज विकास का कभी विरोधी नहीं रहा, किन्तु नैतिक मूल्यों एवं संस्कृति पर कुठाराघात करता विकास हमें कतई मंजूर नहीं। उन्होंने विश्व की समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं एवं आर्य जनों से प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल एवं मुख्यमन्त्री महोदयों को विरोध पत्र भेजने की अपील भी की।

– विनय आर्य, महामन्त्री

शपथ के पूर्व मेघालय राजभवन यज्ञ सम्पन्न

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गंगा प्रसाद आर्य जी मेघालय के राज्यपाल मनोनीत होने के पश्चात् 5 अक्टूबर 2017 को मेघालय की राजधानी शिलांग स्थित राज्यपाल भवन में शपथ ग्रहण के पूर्व प्रात: काल यज्ञ करवाया गया। महामहिम राज्यपाल ने बड़े प्रसन्नतापूर्वक यज्ञ किया यज्ञ में उनके साथ परिवार के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

आर्यसमाज का YouTube टीवी चैनल
20 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

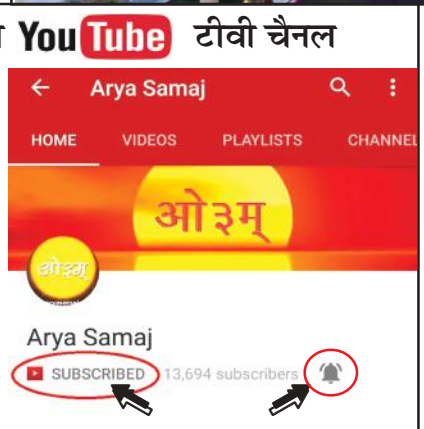

आप भी देखें और सब्सक्राइब करें; घंटी बटन को दबाकर नई वीडियो की सूचना प्राप्त करें।
आप अपने कार्यक्रमों – भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें।
– महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का व्हाट्एप्प मोबाइल
आओ जुड़ें – साझा करें विचार

134वें महर्षि निर्वाण दिवस दीपावली पर विशेष

कालजयी ऋषिवर! तुम्हें प्रणाम

- डॉ. महेश विद्यालंकार

....दया और आनन्द के भण्डार! मानवता के अमर नायक! देश, धर्म, संस्कृति, यज्ञ, वेद आदि के उद्धारक! आज तुम्हें क्या श्रद्धांजलि दूं? आसुंओं के सिवा कुछ पास नहीं है। हमने तुम्हारे स्वरूप, योगदान, महत्त्व एवं विशेषताओं को समझा ही नहीं। तुम्हें जाना ही नहीं। तुम्हारे उपकारों को स्वीकारा ही नहीं, तुमने सारे जीवन में कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता, पद, प्रतिष्ठा, लोभ आदि नहीं आने दिया। जीवन मे दैवीय और चमत्कारी रूप नहीं आने दिया। मानव बनाकर ही रहे। ऋषि के कट्टर विरोधी और आलोचक भी अन्दर से उनके प्रशंसक थे। तराजू के एक पलड़े पर ऋषि को और दूसरे पलड़े पर संसार के सभी महापुरुषों को रख दिया जाए, तो निश्चय ही ऋषि का पलड़ा भारी होगा। ....

तमसो मा ज्योतिर्गमय अन्धकार पर प्रकाश की विजय का प्रेरक पर्व दीवाली ऋषि की स्मृति का भी दिवस है। इसी दिन उस महामानव ने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था। जाते-जाते संसार को सत्य के प्रकाश की दीवाली दे गया। पुण्यात्मा ऋषि दयानन्द सत्य के पुजारी थे। सत्य के लिए जिए और सत्य पर ही शहीद हो गए। उन्हें सत्यपथ से कोई विचलित नहीं कर सका। सत्य की रक्षा के लिए चौदह बार जहर पीया। उनका संकल्प था - ''सत्यं वदिष्यामि'' सत्य ही मानूंगा और सत्य ही बोलूंगा। उन्होंने सत्य के विरुद्ध कभी समझौता नहीं किया। ऐसे प्रभु के वरद पुत्र दयानन्द की अमर गौरव गाथा स्मरण करने की पुण्य तिथि है- दीवाली।

ऋषिवर! तुम्हें कोटि-कोटि स्मरण और प्रणाम। तुम्हारी मंगलमयी स्मृति को अनेकशः नमन और श्रद्धांजलि। तुम्हें संसार से विदा हुए 134वां वर्ष व्यतीत हो रहा है। तुम्हारे नाम और स्मरण से हृदय श्रद्धा-भक्ति से भर उठता है। नेत्र सजल होकर तुम्हारे उपकारों तथा स्मृति पर अर्घ्य चढ़ाने लगते हैं। तुमने न जाने कितने पतितों, भूले-भटकों आदि का उद्धार किया। तुम आजीवन विषपायी बनकर संसार को अमृत लुटाते रहे। ऋषि तुम धन्य थे। तुम्हारा महान इतिहास प्रशंसनीय है। तुम्हारे उपकार वन्दनीय हैं। तुम्हारा तप-त्याग तथा बलिदान स्मरणीय है। तुम्हारा व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व अर्चनीय है। तुम सबसे निराले थे। तुम्हारे सारे कार्य भी निराले थे। जो भी तुम्हारे सम्पर्क में आया, वह अमूल्य हीरा बन गया। तुम्हारे अन्दर अद्भुत दैवीय चुम्बकीय शक्ति थी। शत्रु भी चरणों में नत-मस्तक होकर गया। ऋषिवर! तुम क्या थे? यह आज तक संसार न जान सका। सदियों के बाद भारतमाता की पीड़ा को समझने वाला और उसके आंसुओं को पोंछने वाला कोई महामानव था - तो ऋषिवर तुम्हीं थे। तुमने अपने लिए जीवन भर कुछ न मांगा, न संग्रह किया, न मठ-मन्दिर आदि बनाए। जीवन भर जहर पीते रहे, अपमान सहते गए, पत्थर खाते रहे। भूली-भटकी मानव जाति में फैले अज्ञान, अन्धकार, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम आदि के लिए रातों में जागकर करुण-क्रन्दन करते रहे-

''एक हूक सी दिल में उठती है, एक दर्द जिगर में होता है। हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है।''

ओ! दया और आनन्द के भण्डार! मानवता के अमर नायक! देश, धर्म, संस्कृति, यज्ञ, वेद आदि के उद्धारक! आज तुम्हें क्या श्रद्धांजलि दूं? आसुंओं के सिवा कुछ पास नहीं है। हमने तुम्हारे स्वरूप, योगदान, महत्त्व एवं विशेषताओं को समझा ही नहीं। तुम्हें जाना ही नहीं। तुम्हारे उपकारों को स्वीकारा ही नहीं, तुमने सारे जीवन में कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता, पद, प्रतिष्ठा, लोभ आदि नहीं आने दिया। जीवन में दैवीय और चमत्कारी रूप नहीं आने दिया। मानव बनाकर ही रहे। ऋषि के कट्टर विरोधी और आलोचक भी अन्दर से उनके प्रशंसक थे। तराजू के एक पलड़े पर ऋषि को और दूसरे पलड़े पर संसार के सभी महापुरुषों को रख दिया जाए, तो निश्चय ही ऋषि का पलड़ा भारी होगा। क्योंकि वह मुक्तात्मा प्रभु की इच्छा पूर्ति के लिए आई थी। अपनी कोई इच्छा नहीं थी। जैसे समस्त पर्वतों में हिमालय की अलग पहचान है। ऐसे ही समस्त महापुरुषों में ऋषिवर तुम्हारी अलग आन-मान-शान और पहचान है। तुम्हारा जीवन भी प्रेरक था, तुम्हारी मृत्यु भी प्रेरक थी। जाते-जाते भी नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बनाकर, वैदिक धर्म का दीवाना दे गए। तुम्हारे जीवन की एक-एक घटना में अपार प्रेरणा भरी हुई है। तुम्हारे ग्रन्थों की एक-एक पंक्ति में नवजीवन का अमर सन्देश भरा हुआ है। घनघोर अमावस्या की रात में संसार को ज्ञान और प्रकाश की दीपावली दे गए हो। इसी सत्य ज्ञान और प्रकाश को प्रचारित एवं प्रकाशित करने के लिए तुमने 'आर्य समाज' बनाया था। वह तुम्हारे बाद खूब फला-फूला और बढ़ा। जीवन तथा जगत के प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज के विचारों, सिद्धान्तों तथा आदर्शों को सराहा गया। अलग पहचान बनी। ऋषिवर! तुम्हारे दर्द और उद्देश्य को जिन्होंने समझा, वे दीवाने, पागल और जुनून वाले होकर निकल पड़े। उनकी करनी-कथनी एक थी। उनका जीवन और सोच-विचार तुम्हारे से अनुप्राणित था। उसी का परिणाम रहा-संस्था, संगठन, अनुयायी आदि की दृष्टि से आर्य समाज सब में आगे रहा है। अतीत का जितना भी गुणगान व प्रशंसा की जाए थोड़ी है।

आर्यो! ऋषि निर्वाणोत्सव पर शान्त भाव से सच्चाई को समझकर जीवन, जगत और आर्य समाज के लिए सोच सकें। कुछ कर्त्तव्य, सेवा, त्याग, सहयोग आदि की भावना जगा सकें। कुछ अपने को बदल सके। ऋषि की पीड़ा को समझ सकें। कुछ दिशा-बोध ले सकें। मिशन के लिए समय, शक्ति व सोच लगा सकें। स्वार्थ, पद, अहंकार, लोभ, लाभ आदि से ऊपर उठकर स्वयं पद-त्याग कर सकें। अपने जीवन घर और आर्य समाज को सम्भाल सकें। तो हम सच्चे अर्थ में ऋषिवर को श्रद्धांजलि देने के हकदार हैं। तभी ऋषि की जय बोलने की सार्थकता है। अन्तर में प्रकाश आ जाए तभी दीपावली मनाने की सार्थकता है। यदि मेरे लिखित विचारों से किसी में सोच, दृष्टि, व्यवहार, स्वभाव, कर्म आदि में परिवर्तन आ जाए, तभी मेरे लेखन की सार्थकता है।

-बी.जे.29, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

अब देखिए

सारथी
एक संवाद

हर रविवार
दोपहर
12:30
बजे से

Veda Prarthana - 17

Make God Realization Your Main Goal in Life Instead of Earning Wealth

- Acharya Gyaneshwarya

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम्।
विश्वो रायऽइषुध्यति द्यम्नं वृणीत
पुष्यसे स्वाहा।।

Vishvo devasaya netuh marto vurita sakhyam. Vishvo raye ishudhyati dyumnam vranit pushyase swaha.

(Yajur veda 22:20)

Vishvo marto All human beings sakhyam vurita should develop/establishfriendship with God who is devasaya Supreme Divine Being and netuh the Leader of everybody. Vishvo raye ishudhyati most people are putting all of their effort in earning money and material prosperity, pushyase while for the fulfillment of the soul, dyumnam vranit swaha they should be making effort and sacrifice to reach God and attain bliss.

God, our Supreme Father through this mantra gives the following command to all human beings that this physical body is mortal but your soul is immortal. Therefore, for the uplift of your soul, your primary goal in life should be attainm ent of God realization and finding bliss as well as making utmoust effort to make progress in achieving this goal. You should always remember that God alone is the Divine Being whose attributes include creation, maintenance and dissolution of the universe. He is our Ultimate Protector, Benefactor, Nurturer and the Supreme Leader of all. He is our Ultimate Guru, Guru of all gurus. The mantra further states that to achieve your goal of God realization, you must develop and establish friendship with God for He is the Ultimate Friend who fulfills our needs and virtuous desires. Although, Omnipresent God has no shape or form, yet in His kindness as the Constant Companion to our soul, He always guides and inspires us to follow a virtuous path in life. Moreover, He gives us encouragement to become brave and fearless. He is the Final Giver, Giver to all givers. There is no other better Well-Wisher of human beings that God.

The great surprise is that despite all what is stated in the above paragrph, human beings these days spend all their time, energy, intellect tnd opportunities in life in gathering items of physical pleasure and prosperity or earning money which allows them to purchase the same. Among human beings there is a false belief these days that having more and more wealth and by enjoying various physical luxuries that the money can buy, one will find mental satisfaction, contentment, happiness, peach, security and fulfillment in life. Moreover, people believe that with acquisition of wealth all unhappines, deprivations, worries, fears and miseries wil disappear. However, what one in reality observes in our current world is that even very wealthy persons with material prosperity are not necesarily happy and suffer from one or the other type of troubles in life. Many of them are full of worries, irritable, not contented, and miserable persons.

Therefore, this mantra instructs that while we human beings should earn as much wealth and prosperty as possible by fair and virtuous means, but our main focus in life should be attainment of God realization and bliss. The method to attain bliss in life is to follow God's teachings and commands as given in the Vedas and as further explained by rishis in other Vedic scriptures such as Upanishads and Darshanas. We should follow these teachings with faith, devotion, selfessness, discipline and our utmost effort. Moreover, we should be willing to withstand any hardships that come along the way and not compromise by cutting corners. It is only in this way, the old bad sanskars (root impressions and memories of the past in this life as well as previous lives) such as lying, anger, lust, jealousy, morbid attachments to others, vanity, sloth and laziness are gradually uprooted and destroyed. Only then, the mind, intellect and soul are gradually able to replace bad sanskars with good sanskars such as truth, honesty, compassion, love, caring, forgiveness, generosity and other virtuous thoughts. The life becomes simple, pure, liverated, joyful, peaceful and full of bliss.

Also, as one advances further, one starts to understand the true nature of our immortal soul as separate from our physical body and the soul's attributes such as free will to do karma as well as the ability to gain knowledge, wisdom and bliss directly from God. From then on the person should make a deep commitment to follow truth and virtue in life at all times irrespective of the circumstances. Thus a person's soul gets rid of all sorrows in life and experiences attainment of God realization and complete bliss. The only other goal of such a devotee besides further strengthening and nurturing one's own practice is to selflessly help others along a similar path. On the other hand, if we ignore or do not listen to God's advice and spend all our energy in life in gathering wealth by any means possible whether right or wrong, we will not only lose God's friendship but also find our life's journey empty, full of regrets, sorrows and unhappiness.

Therefore, come friends and companions, let us make our life successful by making ourselves worthy friends of God who is the Ultimate Source of knowledge, wisdom, strenght and bliss.

(For explanations of prosperity in the Vedas also see mantra # 3,4,6 and 21)

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

शब्दार्थ - 29

गतांक से आगे....

अंगप्रोक्षणम्	-	अँगोछा	उष्णीषम्	-	पगड़ी	पुत्रवधूः	- पुत्र की पत्नी
वृहतिका	-	ओवरकोट	शाटिका	-	साड़ी	स्नुषा	- पुत्रवधू
शंकवम्	-	ऊनी	कार्पासम्	-	सूती	पितष्पत्रसृपतिः	- फूफा
वस्त्रम्	-	कपड़ा	प्रावारकम्	-	शेरवानी	पितृष्वस्त्रीयः	- फुफेरा भाई
कम्बलः	-	कम्बल	ननान्दा	-	ननद	अग्रजः	- बड़ा भाई
कंचुकः	-	कुर्ता	नप्तृ	-	नाती	अग्रजा	- बड़ी बहन
प्रावरः	-	कोट	पौत्रः	-	पोता	स्वसृ	- बहन
तूलस्तरः	-	गद्दा	पौत्री	-	नतिनी	स्वसृपतिः	- बहनोई
जघन वस्त्रम्	-	जाँघिया	मातामहः	-	नाना	पितृष्वसा	- बुआ
शिरस्त्राणम्	-	टोपी	पतिः	-	पति	पितामहः	- बाबा
उपधानम्	-	तकिया	प्रमातामहः	-	परनाना	भ्रातृजः	- भतीजा
गात्रमार्जनी	-	तौलिया	प्रपितामहः	-	परदादा	भ्रातृजा	- भतीजी
उत्तरीय वस्त्रम्	-	दुपट्टा	मातृष्वसृपतिः	-	मौसा	भ्राता	- भाई
अधोवस्त्रम्	-	धोती	श्वसुरः	-	ससुर	भ्रातृजाया	- भाभी
पायदामः	-	पाजामा	सहोदरः	-	सगा भाई	भागिनेयः	- भानजा
आप्रपदीनम्	-	पैंट	श्यालः	-	साला	मातुलः	- मामा
अन्तरीयम्	-	पेटीकोट	श्वश्रूः	-	सास	मातुली	- मामी
कंचुलिका	-	ब्लाउज	प्रपितामही	-	परदादी	मातुल पुत्रः	- मामा का पुत्र
करवस्त्रम्	-	रुमाल	आत्मजः	-	पुत्र	स्वामी	- मालिक
तूलिका	-	रजाई	आत्मजा	-	पुत्री	मित्रम्	- मित्र
कौशेयम्	-	रेशमी					
कौपीनम्	-	लँगोटी					

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

मो. 9899875130

8वां वरिष्ठ नागरिक अभिनन्दन समारोह

रामगली आर्य समाज मन्दिर हरी नगर घण्टाघर नई दिल्ली के तत्त्वावधान में 8वां वरिष्ठ नागरिक अभिनन्दन समारोह 1 अक्टूबर को बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आर्य समाज के युवा वर्ग ने अपने क्षेत्र के व आर्य समाज के सभी वरिष्ठ नागरिकों को आयु वर्ग के अनुसार सम्मानित किया। इस अवसर पर आचार्य श्री रघुराज शास्त्री ने बुजुर्गो के महत्त्व को बताते हुए समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए नौजवानों को प्रेरितकिया। समारोह के अन्त में प्रधान श्रीमती राजेश्वरी आर्या ने सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। ***- श्रीपाल आर्य, मंत्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 15 अक्तूबर, 2017 दोपहर 2:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक रविवार 15 अक्तूबर, 2017 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में दोपहर 2:30 बजे आयोजित की गई है। दिल्ली सभा के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें। सभी सदस्यों को पत्र के माध्यम से विधिवत् सूचना प्रपत्र भेजे जा चुके हैं। – ***विनय आर्य, महामन्त्री***

वैदिक सत्संग समारोह

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का वैदिक सत्संग समारोह एवं चतुर्वेद शतक यज्ञ 1 से 5 नवम्बर तक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री के प्रवचन एवं श्री सुमन आर्य के भजन होंगे। समापन समारोह के अवसर पर डॉ. महेश विद्यालंकार, आचार्य श्याम देव के भी प्रवचन होंगे। भाषण प्रतियोगिता 3 नवम्बर को होगी जिसका **विषय – ईश्वर निराकार क्यों और कैसे?** निश्चित किया गया है।

– ***विजय दीक्षित, मन्त्री***

79वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कोसीकलां का 79वां वार्षिकोत्सव महर्षि दयानन्द भवन में 1 से 4 अक्टूबर के मध्य सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ हवन के पश्चात् बैण्ड बाजों के साथ शोभायात्रा निकाली गई। तदुपरान्त राष्ट्ररक्षा, कुरीति निवारण, आर्य विद्वान, समाज-सुधार सम्मेलनों का आयोजन किया गया। पं. बाल किशन आर्य एवं बहन अलका आर्य, कु. श्रुति कीर्ति, रोशनी ज्योति, आचार्य स्वदेशजी आचार्य विपिन बिहारी आर्य ने भजन व ज्ञानमयी गंगा प्रवाहित की।

–***राजेन्द्र प्रसाद आर्य, प्रधान***

विज्ञापन

आर्यसमाज सै-35 एवं 43 चण्डीगढ़

17वां वार्षिकोत्सव

3 नवम्बर से 5 नवम्बर, 2017

स्थान : कुलवन्त राय सर्वहितकारी विद्या मन्दिर, सै. 43, चण्डीगढ़

यज्ञ : प्रतिदिन प्रात: 8 से 9 बजे

प्रवचन : प्रात: 9:45 से 10:05 बजे

भजन-प्रवचन : सायं 5:30 से 7:30

मु.वक्ता : आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र

सीनियर रिसर्च स्कॉलर, संस्कृति मन्त्रालय एवं आर्यसमाज के चिन्तक

डॉ. शशि धमीजा, *प्रा. आर्य कॉलेज अम्बाला*

भजन : श्रीमती कविता आर्या

-: निवेदक :-

आर्यसमाज के सभी अन्तरंग सभासद

मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र में यज्ञ सम्पन्न

मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र के मिथुन पार्क में गत 30 जुलाई से प्रति रविवार यज्ञ एवं प्रवचन के कार्यक्रम प्रात: 8 से 10 बजे तक नियमित रूप से चल रहा है। कार्यक्रम में स्कूल के छोटे-छोटे बच्चे बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं तथा उन्हें गायत्री मंत्र कंठस्थ भी हो गया है।17 सितम्बर के यज्ञ ब्रह्मा श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कार्यक्रम संयोजक श्री रजनीश वर्मा जी की भरपूर प्रशंसा की। श्रीमती सुनीता बग्गा पंजाबी बाग के मधुर भजनों को सुन वातावरण संगीतमय हो गया। श्री रजनीश वर्मा जी ने सभी महानुभावों से आग्रह किया है कि यदि कोई आर्य परिवार मायापुरी क्षेत्र में रहते हों तो उसके नाम, पते जिस भी आर्यजन के पास हो वे निम्न महानुभावों को प्रदान की कृपा करें –

रजनीश वर्मा 9811362087

कर्मयोगी 8178993260, 9868161037

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2018 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पुरोहितों/धर्माचार्यों की आवश्यकता

ऐसे महानुभाव जो गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा प्राप्त हैं तथा दिल्ली की आर्यसमाजों में पुरोहित/ धर्माचार्य के रूप में अपनी सेवाएं देना चाहते हैं। वे कृपया आवेदन पत्र नाम, पते, मोबाईल नं., ईमेल, योग्यता आदि लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें –

अध्यक्ष/संयोजक, वैदिक प्रचार समिति

द्वारा/दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन

सभी धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि आर्य समाज के कार्यो और देश-धर्म सम्बन्धित कार्यो में विशेष योगदान और सेवाएं प्रदान करने वाले आर्य नेताओं, आचार्यों, विद्वानों, प्रचारकों, पुरोहितों और आर्य वीर-वीरांगनाओं से सम्बन्धित विशेष घटनाएं जैसे विधवा-विवाह, छुआछूत, स्त्री-शिक्षा, वेद-प्रचार, पाखण्ड-खण्डन, जात-पात बन्धन आदि से सम्बन्धित या कोई अन्य प्रेरक प्रसंग आदि की जानकारी जो आज तक प्रकाशित नहीं हुई हो और आपकी जानकारी में है तो आप कृपया **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** पर या **aryasabha@yahoo.com** पर मेल कर दीजिए। हमारा प्रयास रहेगा कि आपके द्वारा प्रेषित सूचना/घटनाक्रम को प्रकाशित कराया/किया जाए। – **सम्पादक**

वैदिक महोत्सव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, वाराणसी के तत्त्वावधान में 29 अक्टूबर 1 नवम्बर तक वैदिक महोत्सव का आयोजन महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल आनन्दबाग, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी में किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ भजन, प्रवचन, महिला विमर्श, युवा विमर्श, आर्य कार्यकर्त्ता विमर्श में आर्यत्व के विकास में नवीन कार्य योजना पर चर्चा होगी। –***प्रमोद आर्य, मंत्री***

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। – ***सम्पादक***

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज (गुरुकुल)
अशोक विहार-2, दिल्ली-52

प्रधान – श्री सत्यपाल गांधी
मन्त्री – श्री राकेश बेदी
कोषाध्यक्ष – श्री रतन लाल मुखीजा

शोक समाचार

श्री अंगद सिंह आर्य को पितृशोक

आर्य समाज खजूरी खास, दिल्ली के प्रधान श्री अंगद सिंह आर्य के पिताश्री हिम्मत सिंह जी का दिनांक 8 अक्टूबर को 80 वर्ष की आयु में उनके पैत्रक गांव में निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा उनके निवास ग्राम पुठिया पोस्ट पिलुआ जिला एटा (उ.प्र.) में सम्पन्न की जाएगी।

श्री सत्यनारायण लाहौटी नहीं रहे

आर्यजगत के दानवीर भामाशाह अनेक धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के पालक पोषक एवं सम्वर्धक, देहदानी श्री सत्यनारायण जी लाहौटी वानप्रस्थ जी का 6 अक्तूबर, 2017 को सायं 6 बजे निधन हो गया।

श्रीमती कमला त्यागी जी का निधन

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता एवं सांसद स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की बहन श्रीमती कमला त्यागी जी का गत् 2 अक्तूबर को निधन हो गया वे लगभग 82 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर किया गया। 6 अक्टूबर को आर्य समाज डिफेंस कॉलोनी में श्रद्धांजलि सभा एवं शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12-13 अक्टूबर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 अक्तूबर, 2017

प्रतिष्ठा में,

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2017
मांडले (म्यांमा) में सम्पन्न
भारत सहित देश-विदेश के हजारों आर्यजनों ने की भागीदारी
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन - 2018
भारत की राजधानी नई दिल्ली में

विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी आगमी अंकों में

भव्य यज्ञ व सत्संग सम्पन्न

आर्य समाज गांधी नगर के तत्त्वावधान में 2 अक्टूबर को भव्य यज्ञ व सत्संग का आयोजन आचार्य यशपाल शास्त्री व आचार्य नरेश शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया। भजन पंडित दिनेश दत्त जी के हुए। निगम पार्षद श्री रोमेश गुप्ता ने भी यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान कीं व अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस असवर पर आर्य पुत्री पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम व बच्चों ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की बहुत ही सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने आर्य पुत्री पाठशाला की परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त बच्चों को शील्ड प्रदान कर उनका उत्साह वर्धन किया। कार्यक्रम में श्री अभिमान्यु चावला, श्री जगदीश शर्मा श्री रामपाल पांचाल व श्री पतराम त्यागी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अन्त में प्रधान श्री रामपाल सिंह ने सभी का धन्यवाद किया। - **शिवशंकर गुप्ता, मन्त्री**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह